A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

फर्रुखाबाद घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने में युवा तबला वादकों की भूमिका

Prabhat Bali[1], Dr. Sonia Ahuja[2]

1 Research Scholar, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University
2 Assistant Professor, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University

OPEN ACCESS CC BY

सार

तबला वादक की परम्परा भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक महत्वपूर्ण अवयव है इस परम्परा को पढ़ी आगे बढ़ाने मे घराने की महत्वपूर्ण भूमिका रही है वंशावली व शिष्य परम्परा किसी भी विद्या विशेष की प्रगति की सूचक होती है जो उसका प्रचार प्रसार करती हुई यथेष्ट सम्मान का अधिकारी बनाती है प्रस्तुत शोध पत्रिका में मैने फर्रुखाबाद घराने के विकास में युवा तबलवादको के योगदान पर चर्चा की है फर्रुखाबाद घरान के प्रवर्तक उस्ताद विलायत अली खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर खाँ उस्ताद अहमद जान थिरकवा, अस्ताद अमीर खाँ, उस्ताद अहमद, करामत उल्ला खाँ, पं. ज्ञान प्रकाश, पं. निखिल घोष, पं. नयन घोष, पं. आनिंदो चैटर्जी, पं. बिप्लव भट्टाचार्य को माना जाता है फर्रुखाबाद घराने की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि इसमें दिल्ली के किनार और लखनऊ के लव का विधिवत प्रयोग किया गया है। इस घराने के विकास में अनेक महानुभूतियों ने अपना अपना योगदान दिया है। उदाहरणार्थ उस्ताद विलायत अली खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद अमीर खाँ उस्ताद अहमद जान थिरकवा, अस्ताद अमीर खाँ, उस्ताद अहमद, करामत उल्ला खाँ, पं. ज्ञान प्रकाश, पं. निखिल घोष, पं. नयन घोष, पं. आनिंदो चैटर्जी, पं. बिप्लव भट्टाचार्य इत्यादि आज भी इस घराने के प्रचार प्रसार एवं विकास अनेक युवा तबला वादक अपना पूर्ण सहयोग दे रहे है उदाहरणार्थः शुभांकर बैनर्जी, रिम्पा शिवा, श्री अनुब्रत चैटर्जी, श्री रूपक भट्टाचार्य, श्री संदीप घोष, सुनैना घोष श्री विवके पण्डित, श्री सिद्धार्थ चैटर्जी इत्यादि।

मूल शब्द *:- फर्रुखाबाद घराना तबला, विकास, वादक*

प्रस्तावना

संगीत के अन्तर्गत गीत वाद्य व नृत्य तीनो कलाओ का समावेश सर्वमान्य है व तीनो कलाओं का आधार तत्व "ताल" है। लय के जन्म के साथ ही उसको दर्शन के लिए किसी क्रिया की आवश्यकता पड़ी और परिणामस्वरूप ताल का निर्माण हुआ। काल का अर्थ है समय और समय के माप या बन्धन का नाम ताल हैं। 'संगीतार्णव' में ताण्डव नृत्य से "ता' और लास्य से "ल' के संयोग से ताल शब्द की व्युत्पत्ति बतायी गई है। "रांगार्णव' के अनुसार 'तल' शब्द के साथ अनु प्रत्यय लेगाने से ताल शब्द की व्युत्पत्ति होती है। "सगीत दर्पण में "तकार से शंकर या शिव और 'लकार' से पार्वती या शक्ति दोनों के योग को ताल कहा गया है।

फर्रुखाबाद घराना

लखनऊ घराने के प्रसिद्ध उस्ताद बख्शू खों जी के शिष्य व दामाद उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ साहब फर्रुखाबाद घराने के संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने लखनऊ वादन शैली में मूलभूत परिवर्तन किया और अनेकों प्रकार की रचनाएं कर फर्रुखाबाद घराने को एक अलग पहचान और प्रतिष्ठा प्रदान की। यदि तकनीक की दृष्टि से देखें तो फर्रुखाबाद शैली दिल्ली और लखनऊ शैली का मिला जुला संयोग है। दिल्ली बाज में जहां किनार का प्रधान्य था, वहीं लखनऊ बाज लव प्रधान था। जबकि इस घराने के प्रणेता हाजी विलायत अली ने चाँ‍ी और लव के मिश्रण से फर्रुखाबाद बाज की स्थापना की।

फर्रुखाबाद घराने की निम्नलिखित विशेषताएं इसे अन्य घरानों से पृथक करती है.-

- "फर्रुखाबाद घराने की यह बहुत बड़ी विशेषता है कि इसमें दिल्ली के किनार और लखनऊ के लव का विधिवत प्रयोग किया गया है। इस बाज में दिल्ली की मिठास और लखनऊ की गम्भीरता दोनों पाई जाती हैं। इसलिए फर्रुखाबाद की वादन शैली को न तो दिल्ली की तरह बद बाज कहा गया और न ही लखनऊ का नचकरण बाज
- फर्रुखाबाद बाज में रेलों का विस्तार रौ के रूप में हुआ है।
- धिरकिट तिरकिट दिगनग दिनतक, ढोंग, दीगड़ तक त्रक जैसे वर्णो का प्रयोग इस घराने की मौलिक विशेषता और मौलिक आधार है।

- गते, गत, परन विविध प्रकार के चलन आदि वादन प्रकारों के प्रस्तुतिकरण में इस घराने का अधिक प्रभाव दिखाई देता है स्वतंत्र वादन के लिए यह बाज अत्यन्त सफल और उत्तम बाज है।

फर्रुखाबाद घराने की शिष्य परम्परा ने इस घराने के सांगीतिक कोष को और भी समृद्ध किया है। उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ जी के शिष्यों-प्रशिष्यों की परम्परा में हुजूरूद्दीन खाँ, पण्डित जियालाल जी, उस्ताद मुनीर खाँ, अता हुसैन खाँ, सुप्पन खाँ, मिऊन खाँ, मोदू खाँ, रघुनंदन, पण्डित भीष्म देव वेदी, उस्ताद चूडिया वाले इमाम बख्श, मुबारक अली खाँ, उस्ताद करम इतल खाँ, बेचाराम चट्टोपाध्याय, पण्डित जहांगीर खाँ, उस्ताद अमीर हुसैन खाँ, उस्ताद नासिर खाँ, उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ, उस्ताद शमशद्दीन खाँ, उस्ताद नन्हें खाँ, उस्ताद नज़र अली खाँ, हुन्नु खाँ, मुरारी लाल, श्यामलाल पाण्डेय, गुरुदयल मुनीम, वासुदेव प्रसाद, रहीम बख्श, बाबा साहब मासेलकर, निजामुद्दीन खाँ, हाफिज खाँ, निखिल घोष, पढ़रीनाथ नागेश्वर, शरद खरगोनकर, तारानाथ राव, रामप्रवेश सिंह एवं उस्ताद नन्हें खाँ के पुत्र मसीतउल्ला या मसीत खाँ, पौत्र करामतउल्ला खाँ प्रपौत्र साबिर खाँ आदि हुए है।

रिम्पा शिवा

रिम्पा शिवा का सगीत जगत म Princess of tablaक नाम से जाना जाता है। इनका नाम 14 फरवरी 1986 ई. को सांगीतिक परिवार में हुआ। बचपन से ही इनकी तबला वादन की शिक्षा प्रारंभ हो गई थी। तबला की शिक्षा मुझे मेरे पिता व गुरू पं. स्वप्न शिवा जो स्वर्गीय उस्ताद करमतुल्ला खाँ, फर्रुखाबदा घराने के शिष्य थे, से प्राप्त हुई।" अपने कठिन परिश्रम व निष्ठा के आधार पर इन्होंने फर्रुखाबाद घराना की परम्परा व प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाया। यह ऐसी सौभाग्यशाली कलाकारों में से एक हैं, जिन्हों उस्ताद जाफिर हुसैन जी से प्रशंसा और सराहना आर्शीवाद के रूप में प्राप्त हुई। "Zakis hussain was made to listen to a type of a young table players sedition when asked if you could guess anything about the artist zakir said "The he was actually a young girl Rimpa shiva. The maestro finally saw her person tive and went over and kissed her hands giving her many types play betters."4

रिम्पा शिवा के तबला वादन में जहां बोलों की स्पष्टता है वही जोरदार प्रहार व बोलों की कोमलता का वैशिष्ट्य भी विद्यमान है। इनके कला प्रदर्शन में लय तथा ताल की सूक्ष्मता बुक विशेष शास्त्रीय विधि से अभिव्यक्त होती है। इन्होंने 500 से अधिक संगीत सम्मेलनों में अपनी कला का प्रदर्शन किया। चूंकि 14 वर्ष की आयु की में ही इन्होंने बड़े-बड़े कलाकारो जैसे पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित अजय चक्रवर्ती के साथ मंच सांझा किया अतः वह जब बजाती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उनके पूर्व जन्म की तरस्था है। इन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन भारत के अतिरिक्त अमेरिका, यूरोप, जापान, इंग्लैंड, नाँवे आदि। देशों में भी किया।

सम्मान व उपलब्धियां

1. 1996 में मात्र 10 वर्ष की आयु में नाँवे में 'Arunland Raj memorial fund' द्वारा अवार्ड व 5000/- रूपए का नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2. 1997 World Child Festival Netherland में में निमन्त्रण प्राप्त हुआ।

3. 1998 में फ्रेंच भाषा ने रिम्पा शिवा पर डाक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाई गई, जिसका 'Rimpa siva princess of tabla' नाम रखा गया। तब इनकी उम्र केवल 12 वर्ष थी।

इसके अतिरिक्त रिम्पा शिवा जी के वादन की सी.डी व डी.वी भी प्राप्त हैं, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित है-

Play list of Rimpa shiva- इनमें विभिन्न तालों (तीनताल में पेशकार, कायदे, टुकड़े, रूपक ताल में पेशकार, फायदे, लग्गी, लड़ी, रेला) आदि को तबला वादन में प्रस्तुत किया है।

Tabla girl Rimpa Shiva Accompanies Flute legend-P.T Hari Prasad Chaurasa (U.S.A) इस सी.डी में रिम्पा शिता ने विश्व विख्यात बांसुरी वादक पंडित हरी प्रसाद चौरसिया के साथ तीनताल में संगति प्रस्तुत की है।

सांगीतिक शिक्षा के साथ-साथ अकादमिक शिक्षा में भी इन्होंने सफलता प्राप्त की है। रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कलकत्ता से संगीत में स्नातकोत्तर (एम.ए) की उपाधि इन्हें प्राप्त है।

यद्यपि अकादमिक शिक्षा में इन्होंने उपरोक्त उपाधियाँ प्राप्त की हैं। किन्तु इनके लिए जीवन की पहली प्राथनिकता तबला वादन ही है, जिसके लिए समर्पण दृढ़ और अनुशासन की अनिवार्यता मान्य है। उनके शब्दों में "I don't really have to succeed. One has to be dedicated, determined and disciplined. I have to set priorities for me, the table is top most on any list."" निसंदेह संगीत रूपी सागर में रिम्पा शिवा का व्यक्तित्व एक बेशकीमती मोती के समान है।

अनुब्रत चैटर्जी

फर्रुखाबाद घराना के प्रसिद्ध तबला वादक अनुब्रत चैटर्जी का जन्म 1 जून 1985 को कोलकाता में पण्डित आनिंदो चैटर्जी के घर हुआ जो स्वयं श्रेष्ठ तबला वादकों की श्रेणी में आते है। इन्हें पदम भूषण तबला वादक ज्ञान प्रकाश घोष जी का अन्तिम गंडा बंधन शिष्य बनने का दुर्लभ सुअवसर प्राप्त हुआ। तदुपरांत इन्होंने अपने पिता से तबला वादन का प्रशिक्षण जारी रखा और फर्रुखाबाद घराने के साथ-साथ लखनऊ और अजराड़ा घराने की शैली की भी शिक्षा ली। इन्होंने संगीतकार के रूप में अपनी शुरूआत वरेव्य व वरिष्ठ पडित हरिप्रसाद चौरसिया जी से की और उनके बाद भारतीय शास्त्रीय संगीत के दिग्गज कलाकारों जैसे उस्ताद अमजद अली खाँ, पंडित बिरजू महाराज, पंडित शिवकुमार शर्मा, उस्ताद शाहिद पखेज, श्री टी. एच विक्कू विना यक्रम और दुनिया भर के सम्माननीय संगीतकारों को साथ संगीत की। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इन्होंने एकल वादन की शुरूआत सन् 1991 में बी.बी.सी बर्ड रेडियो, यूके से की। इन्हें दुनिया भर के आयोजित कुछ सबसे प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय समरोहों में प्रदर्शन का आमंत्रण की भी मिला। जैसे-

The Carnegie hall the Kennedy Centre of performing arts, Washington DC: The esplanade theatres, Singapore, world percussion festival Chicago, the Ferash festival, Jordan, Corfu Festival, Greece Dubrovnic festival Croatia Namaste India festival, Japan, Reit Burg Museum Zurich आदि

इन्होंने फ्रांस के National Symphony Orchestra 'Orchestra जिसे National de Farce कहा जाता है के साथ 2012 में कला प्रस्तुति दी। 2012 में ही इन्हें मुंबई के तत्कालीनलन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के आगे भी प्रस्तुति का अवसर मिला। अनुब्रत चैटर्जी जी ने स्वयं को संगतिकार और एकल तबला वादक रूपों में स्थापित किया और अपने पिता पण्डित आनिंदो चैटर्जी के साथ भी मंच सांझा किया।

अपने पिता का भांति ही श्री अनुब्रत चैटर्जी अपने शिष्यों को सिखते समय गुणवत्ता पर अधिक महत्व देते हैं। इनके द्वारा नियमित रूप से न्यूयॉर्क (Music Tabla Academy for Tabla Research by Andindo Chatterjee) ओर जापान में वर्कशाप का आयोजन किया जाता है। अपनी जड़ों और परम्पराओं के साथ सांमजस्य स्थापित करने पर हमेशा इनका ध्यान केन्द्रित रहा है। इस विचार को ध्यान में रखकर इन्होंने ताल इण्डिया नाम का एक परक्शन ग्रुप बनाया जहां देश के हर क्षेत्र का परक्शन वाद्य से प्रतिनिधित्व किया जाता है। वह कई फयूज़न बैंड का हिस्सा भी रहे है और इन्होंने कई नामी कलाकारों जैसे शंकर महादेव, रणजीत बैरोट, रहीम अल हज, के साथ मंच सांझा किया। इन्होंने Layacurry and beats pieces two नाम से अपना बैंड भी तैयार किया जिसे दुनि भर के संगीत प्रेमियों का स्नेह मिला। इनकी प्राप्तियों में निम्नलिखित अवार्ड भी शामिल है।

President's Gold Modal Award by all India Radio, 2001

Pandit Nikihil Ghosh Memorial Award, 2002

Basava Raj Rajguru Award, 2013

Sangeet Natak Akedeni 'ustad Bisnullah Khan freeva Prakesh, 2016

श्री रूपक भट्टाचार्थी

रूपक भट्टाचार्जी classical percussion की श्रेणी में एक प्रसिद्ध व स्थापित नाम हैं। इनका जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। मात्र चार वर्ष की आयु में ही श्री रूपक भट्टाचार्जी का तबले के माध्यम से संगीत की दुनिया से साक्षात्कार हुआ, जिसका श्रेय इनके पिता व प्रथम गुरु श्री अरूणा भट्टाचार्जी को जाता है। आगे की शिक्षा इन्होंने श्री मृखाल कान्ति बख्शी जी से फर्रुखाबाद शैली में ग्रहण की। इनके अतिरिक्त इन्हें महान् व श्रेष्ठ कलाकार पण्डित अनिंदो चैटर्जी के साहित्य में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। श्री रूपक भट्टाचार्जी ने अपने परिश्रम का प्रतिभा से अपनी कला में कई विस्तार किया, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण ऑल इंडिया रेडियो म्यूज़िक प्रतियोगिता में प्रथम आकर 2004 का राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त करना रहा। कम समय में ही इन्होंने स्वयं की न केवल एकल तबला वादक के रूप में विशेष पहचान बनाई बल्कि एक फरंगत व प्रवीण संगतकार के

रूप में स्वयं की स्थापित भी किया। कुछ ही वर्षों में इन्होंने देश-विदेश की यात्रा करते हुए अपकोएकल तबला वादन के अतिरिक्त भारतीय शास्त्रीय संगीत की महान् और वरिष्ठ विभूतियों के साथ संगत करने का अवसर प्राप्त किया। इन्होंने जर्मनी, स्विजरलैंड, पुस्टोनिया, थाईलैंड, अलजीरिया व अन्य फिनलैंड, ऑस्ट्रिया सीरिया कतर, इंडोरेशिया, इटली, बांग्लादेश, व अन्य यूरोपीय देशों में अपनी कला का सोहा मनवाया। संगीत पंडित जिन शीषे हस्ताक्षरों के साथ इन्होंने संगत की उनमें से पंडित अमिया बांदोपाध्याय, पंडित बुद्धदेव दास गुप्ता, विदुषी, शिशिरकनाधर चौधरी, पण्डित तेजिन्दर नारायण सजूमदार पण्डित सैमित्रो लहरी पडित देबाशीश भट्टाचार्य, शशांक सुब्रमन्यम, पंडित देवोज्योति बोस, पंडित सोहनलाल शर्मा, विदुषी पूर्णिमा चौधुरी विदुषी, कल्याणी रे, विदुषी नया विस्वास पडित रणजीत सेन गुप्ता, श्रमती कौशकी चक्रवर्ती, डॉ. नर्मदा श्रीमती गीता राम मि. केन ज़करमैन पार्था सारथी देसीकन पडिण्त रमेश मित्रा पण्डित सुब्रता रे चौधुरी, पण्डित कमल मलिक आदि प्रमुख नाम हैं।

सम्मान व उपलब्धियां

पंडित निखिल घोष मेमोरियल प्रोमसिंग, आटिस्ट आवार्ड, मुंबई, 2005

भारत सरकार प्रदत्त 'राष्ट्रीय छात्रवृत्ति 2003-2005

पण्डित ज्ञान प्रकाश घोष मेमोरियल फाऊनेश' तबला वादन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

सरबा वारित्य संगीत संस्कृति परिषद् द्वारा 'विशारद' पुरस्कार

श्री रूपक भट्टरचार्जी ने जिन मंचोव समारोहों पर अपने तबला वादन दर्शकों को अभिभूत किया उनका संक्षिप्त वर्णन निन्नलिखित है।

ऑल इंडिया रेडियो नेपाल प्रोग्राम 2014, 2016

आकाशवाणी संगीत सम्मेलन 2012

द. वर्ल्ड हेरिटेड म्यूजिक फैस्टीवल थाईलैंड, 2009

इंटरनेशनल वर्ल्ड म्यूजिक फैस्टीवल निनिस्ट्री ऑफ कल्चर अज्जी रिया, 2010

ओरिएण्ड फैस्टीवल, पुस्तोनिया, 2015

इंटरनेशनल म्यूजिक फैस्ट डमैस्कस, 2012

सुनयना घोष

सुनयना घोष महिला तबला वादक में एक प्रसिद्ध व, आदरणीय नाम व पहचान है संगीत जगत में आने की प्रेरणा इन्हें इनकी माता जी श्रीमती रीता घोष से मिली जो कि। All India Radio कोलकाता में कलाकार है। सुरचना घोष ने 6 साल कि उम्र में ही तबले में कौतुक के रुप में मथाना प्राप्त कर लि थी। तबला वादक की इनकी शिक्षा श्री समर मिश्र के योग्य निर्देशक में हुई। तत्पश्चात् इन्होंने फर्रुखाबाद घराने के पण्डित शंकर घोष जी के पंडित शंकर घोष जी के संरक्षण में शिष्यत्व प्राप्त किया जो भारतीय तबला वादक उस्ताद बिकरम घोष के पिता है।

सुनयना घोष के तबला वादन की विशेषताएं उन्हें उच्च कोटि के कलाकार के रूप में स्थापित करती हैं। स्थापित करती है। उनके अनुसार "उत्तम महिला तबला वादकों का वादन भी उसी स्तर का होना चाहिए जिस स्तर का पुरुष तबला वादकों का महिला तबला वादक को भी उसी प्रकार लय, ताल, वादन के अन्य अंगों का सफलतापूर्वक प्रयोग करना चाहिए।" यही कारण है कि कायदों की बढ़त, उसका विस्तार और बोलो को बजाने की विशेषता इनके वादन से झलकती है।

सम्मान उपलब्धियां

इनका चयन ICCR द्वारा भारत के दस युवा संगीतज्ञयों में हुआ, जिसमें इन्होंने भारत का नेत नेहतव किया। संगीत भूषण, संगीत विशारद, संगीत भास्कर, उपलब्धयो में सम्मानित।

यू के रेडियो द्वारा इनका तबला वादक तरंग एमफिल में प्रसारित किया गया।

न्यूयॉर्क शहर की Tom & Tom उंहंपदम ने पाँचवे संस्करण में इनकी संगीतिक प गतिविधियों को प्रकाशित किया गया।

इनकी Ram Krishan Mission Institutions Of Cultureद्वारा राज्य व राष्ट्रीय प्रधान की गई है

सुनयना जी ने 1993 से अब तक विविध प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया और सभी प्रथम स्थान प्राप्त करती आई है। जिन में से कुछ के नाम निम्नलिखित हैं।

1. West Legal State Academy of dance drama music and visual art

2. The over music conferences Institute of culture and the all bangle tabla competition

इतना ही नहीं सुरयना घोष ने पंडित दीपक चौधरी पंडित महाराज बनर्जी जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के साथ तबला संगति करके प्रशंसा प्राप्त की। तबला वादन के अतिरिक्त कत्थक और गायकी के क्षेत्र में भी सुनयाना जी ने अपनी पहचान बनाई और विभिना प्रकार की कठिन तिहइयो को सितार, सरोद, संतुर और गायकी मैं संगति के दौरान प्रदर्शित किया हैं।

सांगीतिक उपलब्धियों के अतिरिक्त अकादमिक उपलब्धियों में भी इन्होंने नाम अर्जित किया है। इन्होंने रविन्द्रा भारती यूनिवर्सिटी प्रकाशन डिपार्टमैंट से बी. ए. (आनर्स) में भी गोल्ड मेडल प्राप्त किया। सुनयना घोष जी की सफलता जहां उन्हें संगीत जगत में महत्वपूर्ण स्थान दिलाती है, वहीं दूसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी है।

श्री विवेक पाण्डेय

विवेक पाण्डेय 14 वर्षीय तबला वादक है, जो पिछले लगभग 9 वर्षो से सुविख्यात तबला वादक पण्डित आनिंदो चैटर्जी से शिक्षा ले रहे हैं। विवेक पाण्डेय का जन्म न्यायार्क के के सांगीतिक परिवार में हुआ। श्री विवेक पाण्डेय को स्वर्गीय पण्डित अरविन्द मुलगोंकर जी द्वारा उस्तार आमिर हुसैन खाँ जी की 47वीं बरसी 2016 पर एकल तबला वादन के लिए निमंत्रण दिया गया है। इन्होंने सोलापुर पुणे मंबई ऐरिजोना न्यायार्क के अतिरिक्त बडौदा की में भी एकल तबला वादन प्रस्तुत किया।

इन्हें MS University of school of music के तीन के द्वारा 2015 और 2017 में योजना अन्तर्गत बाल कलाकार के रूप में enter mural lecture series on characterizes आमंत्रित किया गया है। इन्होंने कई संगीतकारों व स्थापित कलाकारों के साथ प्रस्तुति दी है। इनकी तान की गुणवक्ता, बोलों की स्पष्टता, त्वरता को दुनियाभर के संगीतकार से प्रशंसा प्राप्त हुई। तबला वादन के अतिरिक्त टेनिस और अकादमी में भी विवेक पाण्डेय का कौशल प्रशंसनीय है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि तबला वादन की परम्परा में क्रमशः छः घरानों दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना लखनऊ घराना फर्रुखाबाद घराना, बनारस और पंजाब घराना का योगदान तबले की वर्तमान प्रसिद्धी का परिणाम है। प्रत्येक घराने के सांगीतिक कोश पीढी दर पीढी वंश और शिष्य परम्परा में आगे बढ़ता रहा है, जिसने इसे और भी समृद्ध और सुप्रसिद्ध बनाया। इसी संदर्भ में फर्रुखाबाद घराना के वंशजों और शिष्यों ने अपनी प्रतिभा, कौशल, मेहनत, सर्मपण और गुरू आशीर्वाद का परिचय देते हुए अपने घराने को सम्पन्न किया। फर्रुखाबाद घराने की वादन शैली की विलक्षणता ने जहां एक विलक्षण पहचान दी वहीं इस घराने के कलाकारों ने इस पहचान को प्रतिष्ठा दिलाई।

हाजी विलायत अली खाँ साहब द्वारा स्थापित इस घराने के नवोदित कलाकार रिम्पा शिवा, सुनयना घोष शुभकर बैनर्जी रूपक भट्टाचार्जी अनुब्रज चैटर्जी संदीप घोष, विवेक पाण्डेय ऐसे प्रतिभावान तबला वादक है। जो अपने वरिष्ठ कलकारों की प्रतिष्ठा को कायम रखते हुए अपने अथक परिश्रम के बल पर तबला वादन को एक नई ऊँचाईयों तक पहुचाने हेतु अग्रसर है। इनकी उपलब्धियां इस बात की परिचायक है कि ये कलाकार फर्रुखाबाद घराने की परम्परा को निस्संदेह आगे बढ़ा रहे है और देशों विदेशों में नाम कमा कर स्वयं की एक स्थापित पहचान भी बना रहे है।

संदर्भ ग्रंथ

1. कौर (डॉ) गुरप्रीतः भारतीय संगीत के अनमोल मणि डॉ. लालमणि मिश्र, कनिष्का पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2004
2. मिश्र छोटे ताल, ताल प्रसून, बी 26/64 दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, 1995